International Journal of Advance and Applied Research (IJAAR)
Peer Reviewed Bi-Monthly

ISSN – 2347-7075
Impact Factor – 7.065
Vol.8 No.1 Sept – Oct 2020

'21वीं सदी की हिंदी कविता में दलित विमर्श'

Bagwan Niyajoddin Shahajahan
Head Dapt Of Hindi
Uma Mahavidyalaya Pandharpur, Dist- Solapur, 413304(Ms)
Email-niyajoddinbagwan@gmail.com

सारांश :

भारतीय सामाजिक व्यवस्था में चार वर्ण थे ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शुद्र। प्रारंभ में वर्ण व्यवस्था कर्मानुसार थी।कालांतर में यह जन्मा के अनुसार हो गई और चतुर्थ वर्ग को सबसे निचले पायदान पर होने के कारण शोषण एवं अमानुषिक व्यवहार का शिकार बनना पड़ा। जब व्यक्ति की पहचान उसकी शिक्षा या निपुणता से नहीं बल्कि जाति के आधार पर होने लगी तो शुद्र समझी जाने वाली जातियाँ पददलित की जाने लगी। हिंदी साहित्य के क्षेत्र में सर्वप्रथम मध्यकालीन संतों के काव्य में जातिगत संकीर्णता दिखाई देती है।नामदेव, कबीर, रैदास आदि संत कवि जो निम्न जातियों से थे, जातिवादी व्यवस्था प्रहार करते हैं। आधुनिक काल क साहित्यकारों ने जातिगत रुढियों के मूल्यच्छेद के लिए प्रतिबद्धता व्यक्त की। दलित साहित्यकारों ने आपबीती की अभिव्यक्ति की है। जिनमें मोहनदास नैमिशराय, सूरजपाल सिंह, ओमप्रकाश वाल्मीकि, शरण कुमार लिंबाले, जयप्रकाश कर्दम आदि ने साहित्य की विभिन्न विधाओं में शोषण और अपमान की प्रतिक्रिया की दर्द भरी अभिव्यक्ति की।

मुख्य शब्द : दलित, दलित विमर्श, गैर दलित, वर्ग व्यवस्था।

प्रस्तावना :

साहित्य समाज का दर्पण है। समाज के उत्थान और पतन का मानव जीवन के साथ गहरा रिश्ता है। समाज की अव्यवस्था, समाज की रीतियाँ, कुरीतियाँ तथा समाज की उपलब्धियाँ किसी भी युग के प्रतिनिधि साहित्यकार की रचना में देखने को मिलती है। जब से सृष्टि का निर्माण हुआ है, तभी से होकर आज तक हमारे समाज में दो वर्ग उभरकर सामने आए हैं, एक शासक वर्ग और दूसरा शोषित वर्ग है। इनमें से जो दूसरा वर्ग है शोषित वर्ग जिसे शक्तिहीन, अर्थहीन एवं मानवीय अधिकारों से वंचित रखा गया है। यह वर्ग आर्थिक, सामाजिक एवं शैक्षणिक रूप से पिछड़ा हुआ है।इसे स्वाभिमान और चेतना से जर्जरित रखा गया है।

हमारी बहुत ही दास्तां यही यही रही है कि सिर्फ पिछड़े वर्ग के लोग ही दलित है, लेकिन यह मान्यता सरासर गलत है। आज के प्रगतिशील समय में दलित की परिभाषा बदल गई है। हमें भी इन परिवारों से अवगत होना जरूरी है। दलित की परिभाषा नामदेव धसाल जी ने इस प्रकार दी है - "दलित यानी कि अनुसूचित जाति, उपजाति, मजदूर भूमिहीन, खेत, मजदूर, यायावर और आदिवासी को दलित

कहते हैं।"[1] इससे स्पष्ट होता है कि दलित केवल हरिजन और नवबोध नहीं, बल्कि गाँव की सीमा से बाहर होने वाली सभी अछूत जातियाँ आदिवासी वूमेन खेत मजदूर, श्रमिक जनता और यायावर साथिया आदि सभी है।

उद्देश्य :

1) दलितों की दयनीय स्थिति का चित्रण करना।

2) दलितों पर होने वाले अत्याचार को चित्रित करना।

3) दलितों की आर्थिक स्थिति को चित्रित करना।

मनुष्य सामाजिक प्राणी है। वह जब उत्पीड़ित होता है, तो आत्मा व्यक्ति के लिए चटपटा उठता है। साहित्य का संबंध भी सुविधाओं से होता है। यह एक दूसरे के पूरक है। साहित्य का मुख्य सरोकार समाज से है। अतः सामाजिक, सांस्कृतिक समस्याएँ, संघर्ष और इसमें अभिव्यक्ति पाते हैं।दलित साहित्य अपने लेखन में आमतौर पर उगे हुए यथार्थ को उड़ने का प्रयास करता है और निश्चित रूप में हुआ। सचिन अपमान और तनाव से उपजा आंदोलन का रूप है, जो समाज में दलित अस्मिता को जगाने में सफल है। साधारण आदमी की अव्यवस्था और घुटन भरी जिंदगी को मसीहा ने अपनी कविता में इस प्रकार व्यक्त किया है -

"आज नहीं तो कल जरूर यह भूखी मानवता जागेगी

अपनी सारी मेहनत का तुमसे हिसाब मांगेगी।"[2]

डॉ. चंद्रकुमार बरढे का कविता संग्रह 'अधूरी चिट्ठी रोशनी' भी दलित विमर्श से परिपूर्ण है। उन्होंने अपने जीवन के संघर्ष को, जो शताब्दियों से उनकी जाति के साथ होने वाले अत्याचारों के विरुद्ध था, अपनी कविता के माध्यम से इस प्रकार अभिव्यक्त किया है -

"सूरज का बेटा हूं
मिट्टी का जाया
सदियों से अंधेरे की तानाशाही के खिलाफ
लड़ता हू आया।"[3]

दलितों को आंबेडकर और महात्मा फुले के साहित्य से स्वाभिमान से जीने की प्रेरणा मिली और अपने दलित होने के मूलभूत कारणों का एहसास हुआ। दलित साहित्यकारों ने अपने समाज को जगाया और सामाजिक परिवर्तन के निरंतर प्रयास किए हैं।

अपने अधिकारों की प्राप्ति के लिए हर दलित साहित्यकार अपनी रचनाओं के माध्यम से एक आंदोलन का रूप धारण करता है। डॉ. जयप्रकाश कर्दम अपनी कविता 'क्रांति का बिगुल बजा दो' में क्रांति का संदेश देते हुए लिखते हैं -

"केवल शब्द मत बने रहो,

अपने अर्थों में आ जाओ,

तीर तलवार से बदल जाओ।
धरती आसमान को हिला दो
अन्याय की दुनिया में
आग लगा दो क्रांति का बिगुल बिगुल बजा दो।"

नवेदुं महर्षि अपनी 'दिल्ली का सपना' नामक कविता में लिखते हैं -

"दिल्ली लाना चाहती / संविधान की जगह /
मनुस्मृति लोकतंत्र की जगह /रामराज्य
आजादी की जगह गुलामी
21वीं सदी के समय की जगह
दस हजार साल पुराना समय
देश के दलित बंधुओं सावधान!
फिर से अवतार लेने की तैयारी में है शैतान।"[4]

संसद पर किसी भी दलित कवि की कविता थी, जिसमें संसद के इतिहास पर दृष्टि डाली है। नवेंदु अपनी कविताओं के माध्यम से दलित चिंतन को एक नई दिशा देने का काम करते हैं। 'सत्तावन साल लंबा सवाल' शीर्षक की उनकी कविता महत्वपूर्ण है। इस कविता में उन्होंने दलित चिंतन का बेहद जरूरी सवाल उठाया है -

"आजादी तो तुम्हें भी /उसी साल मिली थी
जिस साल की हमें।
फिर तुम्हारे पास ही सुख/ इतना अधिक क्यों है,
और हमारे पास इतना कम?
संविधान ने तो तुम्हें भी/ उतने अधिकार दिए हैं
जितने की हमें/ फिर तुम्हीं इतने अधिक विकसित क्यों हैं,
और हम इतने कम?
फिर तुम्हीं इतने अधिक विकसित क्यों है,
और हम इतने कम।"[5]

समाज में स्थित छुआछूत और अस्पृश्यता का वर्णन भी दलित कवियों ने अपनी कविता में किया है। वैज्ञानिक प्रगति के कारण सामाजिक जीवन में बदलाव आया है किंतु अभी भी समाज मन से यह अस्पश्यता का भाव नहीं गया है। 'फिर आजादी हमारे घर में आएगी' कविता में कालीचरण स्नेही उस आजादी को निरर्थक कहते हैं, जिससे अस्पश्य समझी गई जाति के लोगों की समस्याएं, त्रासदी, शोषण एवं

दमन नष्ट करने की आकांक्षा थी। क्योंकि आजादी की प्राप्ति से भी इन समस्याओं और शोषण में कोई परिवर्तन नहीं आया -

" हमारे लिए निरर्थक है आजादी
आपने बदनाम कर दी बापू की खादी
आप हुए गंदगी फैलाने के आदि
हमें किया मजदूर गंदगी ढोलक को
पाखाना धोने को।"[6]

यह जाति- पति, भेद-भाव, छुआछूत, ऊंच-नीच मानव निर्मित है। असंग घोष अपनी 'कंदील' नामक कविता में एक राजनैतिक दल के चुनाव चिन्ह लालटेन को प्रतीक मानते हैं। बिजली की रोशनी में रहने वाली आज की पीढ़ी कंदील के बारे में क्या जाने? पर, यही कंदील गांवों क्या शहरों में पिछली पीढ़ियों के दलित -गरीबों के लिए सब कुछ थी। इसी रोशनी में घर के सारे काम होते थे। कविता में कंदील एक सार्थक बिंब है, जिसमें मां अपने बेटे को बताती हैं कि वह अपने दादा द्वारा सहेज कर रखे गए कंदील को देखकर पूछा कि कैसे वह हमारे समय का साक्षी है-

"तुम पूछना उससे
कैसे चलाते थे हम घर?
कैसे पढ़ाते थे तुम्हारे पिता को?
उसके समय में
वही तो एकमात्र चश्मदीद गवाह है
हमारे समय का
तुम्हारे समय का।"[7]

साहित्य दलित जीवन के यथार्थ को प्रतिबिंबित करने के साथ-साथ उनमें नवीन चेतना जागृत करने का एक सशक्त माध्यम है। दलित अस्मिता की पहचान और सामाजिक न्याय की उपलब्धि के लिए योग्यता को कभी आड़े नहीं आने देना चाहिए। डॉ. सी. बी. भारती जी 'चुनौती' कविता में लिखते हैं -

"हमारी भागीदारी के लिए
योग्यता की शर्त
कब तक फेकोगे तुम
अपना मकड़जाल हम पर
घबराओ नहीं समय आ रहा है
जब हम भी लड़ेंगे तुमसे

तोड़ेंगे तुम्हारा दर्प

सुनो परिवर्तन की सुगबुगाहट

हवा का सुर पहचानों। पहचानों। पहचानों।"[8]

दलित लेखकों का स्वर कटु है, क्योंकि उसने समाज के रुढियों को हजारों सालों से सहा है। सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक विभिन्नताओं के अतिरिक्त दलित रचनाकार अपने समाज की अज्ञानता, दरिद्रता और हीनता से लेडने की इच्छा रखते हुए साहित्य सृजन करता है।

निष्कर्ष :

यह कहा जा सकता है कि हिंदी दलित साहित्य का उद्देश्य दलित समुदाय में जागृति पैदा करना, उनमें स्वाभिमान जगाना और इसके साथ ही अपने ऊपर होने वाले अन्याय के विरुद्ध संघर्ष करना है। हिंदी कविताओं में दलितों का दर्द, पीड़ा की अभिव्यक्ति हुई है। स्वतंत्रता के बाद भी शोषित और उपेक्षित समाज अत्याचार का शिकार है। उन्हें आर्थिक और सामाजिक रुप में स्वतंत्र होना चाहिए। एन सिंह, रमणिका, चंद्रकुमार बर्थडे, जयप्रकाश कर्दम, नवेंदु महर्षि, कालीचरण, सी. बी. भारती दलितों से जोड़कर अपनी कविताएं लिखी है।

संदर्भ :

1) नई सदी और दलित - डॉ. सुजाता वर्मा, पृ.61

2) हिंदी साहित्य में दलित संघर्ष के उन्नायक, एन सिंह रमणिका गुप्ता, पृ.411

3) अधूरी चींट्ठी रोशनी की - चंद्र कुमार बरडे, पृ.14

4) तिनका तिनका आग - जयप्रकाश कर्दम, पृ. 102

5) खामोशी बुन रही है खतरा - कविता संग्रह- नवेंदु महर्षि, पृ. 22-23

6) फिर आजादी हमारे घर आएगी - कालीचरण, पृ.28

7) खामोश नहीं हूं मैं कविता संग्रह, असंघ घोष, पृ.55

8) चुनौती - सी. बी. भारती, पृ. 82